बजट पर चर्चा ही नहीं अपितु कार्यान्वयन की भी आवश्यकता : प्रो. आलोक चक्रवाल

'बजट पर परिचर्चा नहीं बल्कि बजट के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक संस्था और सम्पूर्ण भारतवर्ष को पूरे मनोयोग से कार्य करना चाहिए।' यह उद्गार **गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल** ने वाणिज्य विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,बिलासपुर एवं भारतीय लेखा परिषद, बिलासपुर शाखा के संयुक्त तत्वाधान में आज दिनांक 10 फरवरी 2022 को 'बजट-उपरान्त ऑनलाइन पैनल चर्चा' के आयोजन के उपलक्ष्य में कहा | इस पैनल चर्चा में प्रमुख वक्ता के रूप में गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति **प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल** जी, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से वाणिज्य के वरिष्ठ **प्रोफेसर एच. के सिंह** जी जो पूर्व में MUIT, लखनऊ में कुलपति पद को भी सुशोभित कर चुके हैं, तथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक से वाणिज्य के **प्रोफेसर शैलेन्द्र सिंह भदौरिया** जी रहे|

प्रो. चक्रवाल ने पेटेंट संख्याओं का उल्लेख करते हुए बताया कि जहाँ अन्य राष्ट्रों, विशेषकर चीन, व अमेरिका में पेटेंट की संख्या प्रशंसनीय है, भारत में सुचारु कार्य के उपरांत भी यह संख्या उनकी तुलना में न्यून है | और कदाचित इसी हेतु **राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी अनुभवजन्य अध्ययन को ज़ोर दिया** गया है | इसी क्रम में उन्होंने ये अपेक्षा की कि शैक्षिक संस्थाओं में भी इसी हेतु बजट प्रावधानों में e-content, virtual labs, और विस्तारित कदम के रूप में **डिजिटल विश्वविद्यालय** का उल्लेख किया गया है |

इसके पूर्व बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के वाणिज्य के **प्रो. एच. के. सिंह** ने बताया की बजट वास्तव में एक गणितीय साधन हैं जिसे वर्तमान में नियोजन का प्रत्याय मान लिया गया है | उन्होंने बताया कि वर्तमान सरकार क्रियान्वयन की सरकार है और इसी हेतु योजना आयोग के स्थान पर नीति आयोग की स्थापना की जिसका उद्देश्य ही देश का क्रियान्वयन द्वारा विकास है | प्रो. सिंह ने बजट के इतिहास का भी वर्णन किया और कहा कि जहाँ व्यक्ति 2020 को

एक नकारात्मक भाव से याद रखेगा, वही **2020 ने दो सकारात्मक दृष्टिकोण भी राष्ट्र को दिया, जो हैं – राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं आत्मनिर्भर भारत अभियान** | वर्तमान बजट को उन्होंने **सहकारिता में क्रांति लाने वाला बजट बताया** जिसमें पहली बार सहकारिता विकास हेतु मुद्रा का प्रावधान किया गया है | इतना ही नहीं उन्होंने कहा की वर्तमान बजट **दीर्घकालिक संतुलित बजट** है जो आज से 25 वर्ष आगे के भारत की परिकल्पना का चित्रांकन करता है |

प्रो. शैलेन्द्र सिंह भदौरिया ने अपने वक्तव्य को **जन, जल, जंगल, व जमीन** पर केंद्रित रखा और बताया कि वर्तमान बजट में ना केवल भौतिक संरचना बल्कि डिजिटल संरचना पर भी बल दिया गया है क्योंकि जहाँ कुछ विकसित क्षेत्रों में डिजिटल नवनिर्माण हो चुका है, वहीं अभी भी कुछ क्षेत्र अछूते हैं जहाँ डिजिटल अवधारणा आज के दिन में बेमानी है | प्रो. भदौरिया ने विस्तार से बजट के हर पहलू की चर्चा की और PM गतिशक्ति, डिजिटल रुपया, अवसंरचना विकास, जल संसाधनों का विकास, **केन-बेतवा परियोजना से बुंदेलखंड एवं बघेलखंड के रहन-सहन में सकारात्मक विकास** पर अपना मत रखा | साथ ही उन्होंने DA को Income Tax के दायरे से दूर रखने एवं **NPS के स्थान पर OPS देने की वकालत की** जिससे की वैतनिक कर्मचारियों को दीर्घकालिक राहत मिले |

कार्यक्रम के प्रारंभ में कार्यक्रम की रूपरेखा बताते हुए गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के **वाणिज्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. अशोक कुमार मिश्रा जी** ने बजट के प्रमुख बिंदुओं का विश्लेषण किया तथा सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धिदर का वर्णन, पूंजीगत एवं आयगत प्राप्तियों और खर्चों की चर्चा की | उन्होंने **प्रबंधन एवं वाणिज्य संकाय के अधिष्ठाता प्रो. मनीष श्रीवास्तव जी** का स्वागत किया और गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. शैलेन्द्र कुमार जी को स्वागत उदबोधन हेतु आमंत्रित किया |

कुलसचिव प्रो. शैलेन्द्र कुमार जी ने वाणिज्य विभाग एवं भारतीय लेखा परिषद के इस कार्यक्रम को संचालित करने हेतु भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा कार्यक्रम के सुचारु संचालन के लिए आशीर्वाद दिया | **डॉ शैलेश कुमार**

द्विवेदी, सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय ने कार्यक्रम का संचालन किया |

कार्यक्रम के अंत में **डॉ. पारितोष दुबे, सह-आचार्य, कलिंग विश्वविद्यालय, रायपुर** ने सभी गणमान्य अतिथियों का, श्रोतागण का, आयोजकों का, कार्यक्रम में भाग लेने वाले मीडिया कर्मियों का, एवं समस्त संचालक सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापन किया | उन्होंने विशेष कर भारतीय लेखा परिषद के सभी कार्यकारी सदस्यों का धन्यवाद किया और बिलासपुर शाखा के अध्यक्ष **डॉ. बुद्धदेश्वर प्रसाद सिंघरोल** एवं सचिव **डॉ. अमित मंगलानी** को समय समय पर ऐसे अकादमिक कार्य कराते रहने हेतु प्रशंसा की | उन्होंने सभी समिति के सदस्यों, विशेषकर **डॉ. मुकेश अग्रवाल** की भी प्रशंसा की जिनके सहयोग से कार्यक्रम ना केवल ऑनलाइन रूप से संचालित हो सका बल्कि साथ ही साथ उसका **यूट्यूब पर उसकी लाइव स्ट्रीमिंग** भी हो सकी | **कार्यक्रम हेतु 200 के आसपास शिक्षकों, शोधारथियों, विद्यार्थियों, एवं अन्य व्यक्तियों ने पंजीयन कराया था |**